राधा माधव की मंद मुस्कान

राधा माधव की मंद मुस्कान

राधा माधव की मंद मंद मुस्कान, मधुर मधुर मधुरीली छबि पै, जग सारा कुर्बान - राधा माधव

सुन्दर वस्त्र भूषण पहनें ।
अद्भुत रूप छटा क्या कैहने ।।
जो देखे देखत रहि जाए, मुख से हटे न ध्यान - राधा माधव

ब्रजलीला आधार हैं दोनों।
सर्व सार को सार हैं दोनों ।।
देखन में भले ही दो लागें, पर इक तन मन प्राण-राधा माधव

मधुर मधुर बंसी जब बाजे ।
हर कोई झूमें हर कोई नाचे ।।
'मधुप', युगल हरि का यह दर्शन, मंगल-मूल निधान - राधा माधव

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण **'मधुप'** (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/33527/title/Radha-Madav-ki-madhur-Muskan

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |